पाखण्डी साधु, सन्त एवं महाराज

(राज्यकर्ताओंका तुष्टीकरण, सन्तोंके कार्यक्रमोंमें त्रुटियां इत्यादि)

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण सूत्र '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

卐 अखिल मानवजातिका उद्धार करनेवाली सनातनकी ग्रन्थसम्पदा ! ७

卐 संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी ८

卐 भूमिका १२

卐 अध्याय १४

१. भाषाके प्रति गौरवका अभाव १४

२. संकीर्णता १५

३. जातिगत भेदभाव करना २०

४. देवताओंका अनादर करना २१

५. हिन्दुओंके आस्थाकेन्द्रोंपर टीका-टिप्पणी करना २७

६. राजनेताओंको अत्यधिक महत्त्व देना ३४

७. पाश्चात्योंका अन्धानुकरण करना ४०

८. पाखण्डी साधु और अच्छे साधु ४३

९. पाखण्डी सन्तोंका सूक्ष्म-परीक्षण ४५

१०. सन्तोंके कार्यक्रमोंमें त्रुटियां ५३

११. हिन्दूधर्मको गत वैभव पुनः प्राप्त कराने हेतु खरे सन्तोंका योगदान आवश्यक ! ८६

भूमिका

परम पूज्य भक्तराज महाराज (परम पूज्य बाबा) अपने एक मराठी भजनमें लिखते हैं, 'तुम संसारमें अपने आपको ज्ञानी कहलवाते हो! दूसरोंको सावधान करते हो। स्वयंको कितना ठग रहे हो! क्या तुम्हारे हृदयमें हरिनाम है?' ये पंक्तियां आजकलके तथाकथित (पाखण्डी) साधु-सन्तों और स्वघोषित महाराजोंपर पूर्णतः लागू पडती हैं। परम पूज्य बाबाकी ये मार्गदर्शक पंक्तियां व्यक्तिको केवल सावधान नहीं करतीं, अन्तर्मुख भी करती हैं।

अध्यात्म विषयपर अनेक घण्टे दूसरोंको प्रवचन सुनानेवाले, परन्तु स्वतः धर्माचरण न कर, पाश्चात्योंका अन्धानुकरण कर, समाजको भ्रमित करनेवाले दाम्भिक लोग, 'दूसरोंको ब्रह्मज्ञान सुनाना; परन्तु उस ज्ञानको स्वयं आचरणमें न लाना', इस बातके मूर्त उदाहरण हैं। चैतन्यके स्रोत देवताओंका घोर अनादर कर, हिन्दुओंकी श्रद्धाका भंजन करनेवाले ये पाखण्डी महाराज, ईश्वरभक्तिका प्रसार करनेके स्थानपर समाजको ईश्वरसे दूर करनेका महापाप कर रहे हैं। ऐसे दाम्भिक साधु-सन्तोंके कारण हिन्दू धर्मकी किस प्रकार अपरिमित ग्लानि हो रही है, इसकी जानकारी प्रस्तुत ग्रन्थमें दी गई है।

राष्ट्र और धर्मके हितकी अपेक्षा स्वहितको अधिक महत्त्व देनेवाले, अपना तथा अपने मठ-सम्प्रदाय का आर्थिक विकास साधनेके लिए राजनेताओंसे सम्बन्ध रखनेवाले ये साधु-सन्त महान हिन्दू धर्म और संस्कृति के कलंक हैं। ऐसे पाखण्डी साधु-सन्तों और दुर्जन राजनेताओंका गठबन्धन ही हिन्दू धर्मका घात करनेके लिए कारणीभूत है। राज्यकर्ताओंके तुष्टिकरणमें स्वयंको धन्य माननेवाले तथाकथित साधु, सन्त और स्वघोषित महाराजाओंसे आपका परिचय इस ग्रन्थमें होगा ।

तथाकथित सन्त-महन्त अथवा महाराजाओंके सत्संग, दर्शनसमारोह, सन्तसम्मेलन आदिमें बहुधा खरे भक्तोंका नहीं, राजनेताओं और धनिकों का एकाधिकार दिखाई देता है। इसलिए, श्रद्धालुओंको कभी-कभी उनका दर्शन तक दुर्लभ हो जाता है।

कार्यक्रमका आध्यात्मिक लाभ न मिलनेसे खरे श्रद्धालुओंकी श्रद्धा डगमगा जाती है। ऐसे कार्यक्रमोंके दोषपूर्ण आयोजनसे श्रद्धालुओंको बहुत असुविधा होती है। इसी प्रकार, ढोंगी साधु-सन्त और महाराज, धर्मजागृतिके नामपर जो सन्तसम्मेलन करते हैं, उनमें लगी अध्यात्मकी व्यापार-प्रदर्शनीमें मान-सम्मान और प्रसिद्धि के लिए धनका प्रचण्ड अपव्यय किया हुआ दिखाई देता है। ऐसी दुष्ट प्रवृत्तियोंके अध्यात्ममें प्रवेशके अनेक उदाहरण इस ग्रन्थमें मिलेंगे।

'अध्यात्मके खरे अधिकारी साधु ऐसे पाखण्डी व स्वघोषित साधु-सन्तोंको पहचानें, वे धर्मग्लानि रोकने हेतु सक्रिय हों तथा आजकलके धर्मग्लानिके भयानक कालखण्डमें उनसे समाजको उचित मार्गदर्शन प्राप्त होकर हिन्दुओंकी सर्वार्थसे उन्नति हो ', यह ईश्वरसे प्रार्थना ! – **संकलनकर्ता**